स्मृति - श्रीराम शर्मा

हिंदी - संचयन

कक्षा - 9

पाठ - 2

PART - 1

SUBSCRIBE

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

1. **भाई के बुलाने पर घर लौटते समय लेखक के मन में किस बात का डर था?**

उत्तर भाई के बुलाने पर घर लौटते समय लेखक के मन में बड़े भाई की मार का डर समाया हुआ था। वे सहमे हुए घर की ओर बढ़ते जा रहे थे और मन ही मन सोच रहे थे कि उनसे ऐसा कौन-सा अपराध हो गया जिसकी वजह से उन्हें जल्दी घर पर बुलाया गया है। उन्हें यह भी आशंका थी कि कहीं लड़कों के साथ झरबेरी के बेर तोड़-तोड़कर खाने की ख़बर तो भाई साहब तक नहीं पहुँच गई। भाई साहब की धुनाई से सहमे हुए लेखक ने डरते-डरते घर में प्रवेश किया।

2. **मक्खनपुर पढ़ने जाने वाली बच्चों की टोली रास्ते में पड़ने वाले कुएँ में ढेला क्यों फेंकती थी?**

उत्तर मक्खनपुर पढ़ने जाने वाली बच्चों की टोली अपनी बालसुलभ चंचलताओं के लिए प्रसिद्ध थी। यह पूरी वानर टोली थी, जो रास्ते में पड़ने वाले कुएँ में ढेला फेंककर साँप के क्रोधपूर्ण फुसकार पर कहकहे लगाती थी। पहले दिन कुएँ में ढेला फेंकने पर वे कुछ चकित और भयभीत हुए थे परंतु इसके बाद यह उनकी नियमित दिनचर्या बन गई थी। गाँव से मक्खनपुर जाते और मक्खनपुर से लौटते समय कुएँ में ढेले फेंकना इस टोली की रोज़ाना की आदत-सी हो गई थी। साँप से फुसकार करवा लेना, बच्चे बहुत बड़ा कार्य समझने लगे थे।

3. **'साँप ने फुसकार मारी या नहीं, ढेला उसे लगा या नहीं, यह बात अब तक स्मरण नहीं– यह कथन लेखक की किस मनोदशा को स्पष्ट करता है?**

उत्तर यह कथन लेखक की घबराहट और उलझनपूर्ण मनोदशा को स्पष्ट करता है। कुएँ के पास से गुज़रते हुए, नियमित आदत के अनुसार साँप की फुसकार सुनने के लिए जैसे ही उसने एक हाथ से टोपी उतारते हुए उछलकर साँप पर ढेला फेंका, वैसे ही टोपी के नीचे रखी तीनों चिट्ठियाँ चक्कर खाती हुई कुएँ में जा गिरीं। भाई साहब की ज़रूरी चिट्ठियों को कुएँ में गिरते देखकर लेखक पर बिजली-सी गिर पड़ी। उन गिरती हुई चिट्ठियों को पकड़ने के लिए उन्होंने एक झपट्टा भी मारा, पर वे उनकी पहुँच से बाहर हो चुकी थीं। घबराहट में लेखक को कुछ भी नहीं सूझ रहा था। ढेले की चोट से साँप का आहत होना और फुसकारने की आवाज़ उन्हें सुनाई ही नहीं पड़ी। निराशा, पिटने के भय और उद्वेग से उनकी आँखें भर आईं।

4. किन कारणों से लेखक ने चिट्ठियों को कुएँ से निकालने का निर्णय लिया?

उत्तर लेखक ने अपनी जान ज़ोखिम में डालते हुए, बड़े भाई साहब की दी हुई चिट्ठियों को कुएँ से निकालने का निर्णय लिया क्योंकि उनकी झूठ बोलने की प्रवृत्ति नहीं थी और सच बोलकर वे पिटना नहीं चाहते थे। अगर वे चिट्ठियों का सच बता देते तो रुई की तरह उनकी धुनाई होती। मार के ख़्याल से उनका शरीर ही नहीं मन भी काँप उठता था। दिन भी ढलने लगा था। इसी सोच-विचार में पंद्रह मिनट बीत गए। तब लेखक पिटने के भय और ज़िम्मेदारी की दुधारी तलवार, जो उनके कलेजे पर लटक रही थी, उससे मुक्ति पाने के लिए दुविधा की बेड़ियाँ काटकर कुएँ में उतरे और साँप के साथ भिड़कर चिट्ठियों को निकालने का निर्णय लिया।

5. साँप का ध्यान बँटाने के लिए लेखक ने क्या-क्या युक्तियाँ अपनाईं?

उत्तर लेखक का उद्देश्य साँप के पास पड़ी चिट्ठियों को उठाना था। इसलिए लेखक ने पहले तो डंडे से साँप को मार डालने की योजना बनाई परंतु कुएँ में उतरने पर उन्होंने अनुभव किया कि कच्चे कुएँ के धरातल का व्यास बहुत कम है। ऊपर से लटक कर साँप को मारा नहीं जा सकता और नीचे पहुँचकर डंडे को घुमाने की जगह भी नहीं थी, इसलिए उन्होंने साँप का ध्यान बँटाने के लिए निम्नलिखित युक्तियाँ अपनाईं–

(*i*) उन्होंने कुएँ की मिट्टी साँप पर डाली जिससे उसका ध्यान कुछ पल के लिए बँट गया।

(*ii*) उन्होंने चिट्ठियों को अपनी ओर खींचने के लिए डंडे को साँप की दाईं ओर बढ़ाया। साँप ने डंडे पर ही अपने फन से चोट की तथा उसपर अपना ज़हर उगल दिया।

(*iii*) जब लेखक ने डंडे को दूसरी ओर खींचा तो साँप आसन बदलकर डंडे से चिपक गया।

(*iv*) डंडे के लेखक की ओर खिंच आने से लेखक और साँप के आसन बदल गए। मौका पाते ही लेखक ने लिफ़ाफ़े और पोस्टकार्ड उठा लिए।

6. कुएँ में उतरकर चिट्ठियों को निकालने संबंधी साहसिक वर्णन को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर लेखक ने डंडे से साँप को मारकर चिट्ठियों को निकालने का दृढ़ संकल्प कर कुएँ में उतरने की साहसिक योजना बनाई। पाँच धोतियों और कुछ रस्सी मिलाकर उसमें कड़ी और मज़बूत गाँठें लगाकर उसके एक सिरे पर डंडा बाँधकर उसे कुएँ में डाल दिया। दूसरे सिरे को डेंग के चारों और एक चक्कर देकर तथा एक गाँठ लगाकर छोटे भाई को पकड़ा दिया। और लेखक धोती के सहारे नीचे उतरने लगे। कुएँ के धरातल के चार पाँच गज़ ऊपर रह जाने पर जब उन्होंने नीचे देखा तो अक्ल चकरा गई। कुएँ का व्यास बहुत कम था और साँप फन फैलाए एक हाथ ऊपर उठा हुआ था। लेखक ने नीचे उतरते समय अपने दोनों पैर कुएँ के दीवार पर टिका दिए जिससे दीवार से कुछ मिट्टी नीचे गिरी और साँप ने उस पर मुँह मारा। धीरे-धीरे उतरकर वे साँप के सामने डेढ़ गज़ की दूरी पर खड़े हो गए। डंडा चलाने और उसके फन को कुचलने की कोई गुंजाइश नहीं थी इसलिए बड़ी हिम्मत करके डंडे से चिट्ठियों को दूसरी और सरकाया। साँप का फन पीछे की ओर हुआ और जैसे ही डंडा चिट्ठियों के पास पहुँचा, वैसे ही साँप ने डंडे पर फुँफकारते हुए चोट की और ज़हर उगल दिया। लेखक उछलकर धोती के सहारे कुछ ऊपर चढ़ गए। पुनः साहस बटोरकर डंडे से लिफ़ाफ़े को सरकाने का प्रयास किया तो साँप डंडे से चिपट गया। डंडा लेखक के हाथ में था, इसलिए उनकी ओर खिंच गया। इस पर साँप ने आसन बदल दिया। मौका पाते ही लेखक ने लिफ़ाफ़े और पोस्ट कार्ड उठा लिए तथा उन्हें धोती की छोर में बाँध दिया। छोटे भाई ने उन्हें ऊपर खींच लिया। ग्यारह वर्ष के लेखक बाँहों के सहारे 36 फुट ऊपर चढ़े और कुएँ के बाहर निकले। इस प्रकार लेखक ने जीवन और मृत्यु की परवाह किए बिना कुएँ से चिट्ठियाँ निकालीं तथा उन्हें मक्खनपुर डाकखाने में डाल दिया।

7. इस पाठ को पढ़ने के बाद किन-किन बालसुलभ शरारतों के विषय में पता चलता है?

उत्तर 'स्मृति' पाठ को पढ़ने के बाद विभिन्न बालसुलभ शरारतों के विषय में पता चलता है, जैसे कि साथियों के साथ झरबेरी के बेर तोड़-तोड़कर खाना, स्कूल जाते समय और लौटते समय डंडे से आम तोड़ना, रास्ते में पड़ने वाले कुएँ में गिरे साँप पर ढेला मारना, उसकी फुसकार सुनकर आनंदित होना, अपनी ही आवाज़ की प्रतिध्वनि सुनने के लिए कुएँ में झाँककर चिल्लाना, इधर-उधर उझकते हुए चलना आदि। गाँव के बच्चे अक्सर ऐसी ही हरकतें करते हुए कूदते-फाँदते स्कूल जाया करते हैं। इन शरारतों की ख़बर घर तक पहुँचने पर मार खाने का डर भी बना रहता है, परंतु स्वभाव से नटखट बच्चे इन हरकतों से बाज़ नहीं आते।

8. **'मनुष्य का अनुमान और भावी योजनाएँ कभी-कभी कितनी मिथ्या और उलटी निकलती हैं'– का आशय स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर इस कथन से लेखक यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि मनुष्य बुद्धिजीवी प्राणी होने के नाते किसी भी कार्य को करने के पहले एक पुख़्ता योजना बनाता है, परंतु यह ज़रूरी नहीं है कि उसकी बनाई हर योजना सदैव सफल ही हो जाए। कभी-कभी तो उसकी योजनाएँ एकदम उलटी एवं मिथ्या साबित हो जाती हैं, जैसे कि ग्यारह वर्ष के लेखक ने बड़े आत्मविश्वास के साथ कुएँ में उतरकर साँप को मारकर चिट्ठियों को उठा लेने की योजना बनाई थी, परंतु कुएँ में उतरते ही उसके सारे मनसूबों पर पानी फिर गया क्योंकि साँप को मारने के लिए कुएँ के धरातल पर डंडा चलाने व उसे घुमाने की जगह ही नहीं थी। साँप फन फैलाए एक हाथ ऊपर उठा हुआ लहरा रहा था। यदि लेखक डंडा चलाते हुए उसका फन ठीक से न दबा पाते तो वह पलटकर ज़रूर काटता। इसलिए लेखक की सारी पूर्व निर्धारित योजनाएँ धरी की धरी रह गईं। उन्हें बाध्य होकर नई योजना बनानी पड़ी।

9. **'फल तो किसी दूसरी शक्ति पर निर्भर है' पाठ के संदर्भ में इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर 'स्मृति' पाठ के संदर्भ में इस कथन का आशय है कि किसी काम को करने के परिणामस्वरूप प्राप्त होने वाला 'फल' कार्य की समाप्ति पर मिलता है। फल की चिंता करके किसी भी कार्य को करना उचित नहीं है। 'कर्म' गीता का मूल है तथा फल की चिंता करके कर्म करना अनुचित है। अतः लेखक ने कुएँ में घुसकर चिट्ठियों को निकालने का भयंकर निर्णय लिया। वे चिट्ठियों को हासिल करने के लिए अपनी जान को जोख़िम में डालकर, जान बूझकर उस विषधर से भिड़ने को तैयार हो गए। मौत का आलिंगन हो या साँप से बचकर दूसरा जन्म हो, इसकी उन्हें कोई चिंता नहीं थी। वे सिर्फ़ साँप को मारकर चिट्ठियों को उठा लेना चाहते थे। इस कार्य का परिणाम सुखद होगा या दुखद, साँप से भिड़ने का उन्हें क्या फल मिलेगा, उन्हें नया जीवन मिलेगा या मृत्यु, लेखक को इसकी कोई चिंता नहीं थी। उन्होंने भविष्य के इस 'फल' की आशा भी नहीं की, क्योंकि फल तो कार्य की समाप्ति पर किसी दूसरी दैवी शक्ति से प्राप्त होगा। यह सोचकर वे कुएँ में धोती के सहारे उतर पड़े।